

विमान सुरक्षा पर गंभीर सवाल

गुरुवार का काला दिन, जिसने दो सौ से भी ज्यादा जिंदगी लील ली, लेकिन हमें अभी तक ऐसी घटनाओं से सबक नहीं लिया है। आखिर कब तक ऐसे ही निर्दोष लोगों की जान तोड़ी रहेंगी। गुरुवार के अहमदाबाद एयरपोर्ट पर एयर इंडिया का बा. इंग 787 डीमलाइनर प्लेन क्रैश हुआ है। इसमें गुरुवार के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी समेत 242 यात्री सवार थे, सभी की मौत हो गई। अभी तक देखने में आया है कि घटना होने के बाद ही शासन-प्रशासन हरकत में आता है। इससे पहले भी ऐसी ही घटनाएं हुई हैं, लेकिन उनसे हमारी सरकार ने कोई सबक नहीं सोची है। भारत में विमान हादसों का लंबा इतिहास रहा है, जिन्होंने देश को झकझोर दिया। इन हादसों ने न केवल सैकड़ों चिंदियों को छीना, बल्कि विमान सुरक्षा पर भी गंभीर सवाल खड़े किए। इससे पहले हरियाणा के चर्ची दारी में सऊदी और एयरलाइंस और कजाकितान एयरलाइंस के विमानों की मिड-एयर टकर हुई थी, जिसमें 349 लोगों की मौत हुई थी, जबकि अटर्लाईट महासार, आयरलैंड तट पर विमान में खालिस्तानी आतकी हमले में बम विस्फोट हुआ था, जिसमें 329 लोगों की जान गई थी। मुंबई में अब सागर पर एयर इंडिया फ्लाइट में जनवरी 1978 में टेकआफ के बाद फेल्योर होने के कारण 213 लोगों की मौत हुई थी और भी ऐसे हादसे हैं, जिन्होंने देश को झकझोर है, लेकिन नागरिक उड़ड़यन विभाग ने कोई सबक नहीं सोचा है। आखिर ये हादसे क्यों होते हैं, ये जाना भी जरूरी है कई बार देखने के मिलता है कि विमान का इंजन फेल हो जाता है, निविशन सिस्टम में खिराही हो जाती है या लिंडिंग गियर या विस्स में गड़बड़ी हो जाती है। जब भी वार पायलट की गलती या एयर ट्रैफिक कंट्रोल में हुई छूक की वजह से प्लैन क्रैश हो जाता है। इसके अलावा कई बार प्लैन उड़ा रहे पायलट के अनुभव की कमी की वजह से उसके द्वारा लिये गए गलती के लिए एयर ट्रैफिक कंट्रोल के विमान को देखने से लेते हैं।

हस्तक्षेप की सीमा और नर्यादा होनी चाहिए

ज्यूडिशियल रिप्पू (न्यायिक समीक्षा) की शक्ति का इस्तमाल सर्व से कठना चाहिए, ऐसा तभी हो, जब कोई कानून संविधान के मूल ढाँचे का उल्लंघन करते हैं, कई बार आप (कोई) सीमाओं को पर करने की कोशिश करते हैं और वहां घुसने की कोशिश करते हैं, जहां आमतौर पर न्यायपालिका के प्रवेश नहीं हैं और ज्यूडिशियल अल्टरनेट जरूरी है, लेकिन इस ज्यूडिशियल ट्रेरिस्म में ही बदलना चाहिए, जब विधायिका और कार्यपालिका नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने में असफल रहती हैं, तब न्यायपालिका को हस्तक्षेप करना पड़ता है, लेकिन इस हस्तक्षेप की सीमा और नर्यादा होनी चाहिए।

जिस्टिस बीबी गवर्नर
चीफ जिस्टिस ऑफ इंडिया

आज तक आग ने कोई रिश्ता नहीं निभाया

ज्यूडिशियल रिप्पू (न्यायिक समीक्षा) की शक्ति का इस्तमाल सर्व से कठना चाहिए, ऐसा तभी हो, जब कोई कानून संविधान के मूल ढाँचे का उल्लंघन करते हैं, कई बार आप (कोई) सीमाओं को पर करने की कोशिश करते हैं और वहां घुसने की कोशिश करते हैं, जहां आमतौर पर न्यायपालिका के प्रवेश नहीं हैं और ज्यूडिशियल अल्टरनेट जरूरी है, लेकिन इस ज्यूडिशियल ट्रेरिस्म में ही बदलना चाहिए, जब विधायिका और कार्यपालिका नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने में असफल रहती हैं, तब न्यायपालिका को हस्तक्षेप करना पड़ता है, लेकिन इस हस्तक्षेप की सीमा और नर्यादा होनी चाहिए।

ज्यूडिशियल रिप्पू पर वायरल होने की होड़ ने कई लोगों को गलत रास्ते पर धकेल दिया है। कुछ लोग त्वरित प्रसिद्धि के लिए सार्वजनिक स्थानों पर अश्वल व्यक्तिगत स्वतंत्रता के जरिए वायरल होते हैं और इस रिकॉर्ड करने के अन्ताइन डाल देते हैं। उदाहरण के तौर पर, कुछ युवा सार्वजनिक स्थानों जैसे मेट्रो, बस, पार्क या बाजारों में अश्वल नृत्य, अशोभनीय टिप्पणियां या विवादास्पद कृत्य करते हैं, ताकि लोग उनकी बीड़ीयों को अक्सर नृत्य प्रसिद्धि के लिए नैतिकता और संस्कृति के लिए आपसी सार्वजनिक समाज में व्यक्ति गति करता है।

इस राह की समग्री को अक्सर किलकबेट के रूप में इस्तमाल किया जाता है, क्योंकि यह लोगों का ध्यान तुरंत खींचती है, लेकिन यह प्रवृत्ति समाज के लिए खासकर बच्चे और युवा जो सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं, वे ऐसी समग्री से प्रभावित हो सकते हैं और इसे

मार्टीय संस्कृति में पिता का स्थान आकर्षित है, पिता की धर्मी है, पिता ही संबल है, पिता ही ताकत है। पिता हर संतान के लिए एक प्रेरणा है, एक प्रकाश है और सोंदेवनाओं के पुंज हैं। इसके द्वारा दर्शने और पिता विजय रुपाणी समेत 242 यात्री सवार थे, सभी की मौत हो गई। अभी तक देखने में आया है कि घटना होने के बाद ही शासन-प्रशासन हरकत में आता है। इससे पहले भी ऐसी ही घटनाएं हुई हैं, लेकिन उनसे हमारी सरकार ने कोई सबक नहीं सोची है। भारत में विमान हादसों का लंबा इतिहास रहा है, जिन्होंने देश को झकझोर दिया। इन हादसों ने न केवल सैकड़ों चिंदियों को छीना, बल्कि विमान सुरक्षा पर भी गंभीर सवाल खड़े किए। इससे पहले हरियाणा के चर्ची दारी में सऊदी और एयरलाइंस और कजाकितान एयरलाइंस के विमानों की मिड-एयर टकर हुई थी, जिसमें 349 लोगों की मौत हो गई। अभी तक देखने में आया है कि घटना होने के बाद ही शासन-प्रशासन हरकत में आता है। इससे पहले भी ऐसी ही घटनाएं हुई हैं, लेकिन उनसे हमारी सरकार ने कोई सबक नहीं सोची है। भारत में विमान हादसों का लंबा इतिहास रहा है, जिन्होंने देश को झकझोर दिया। इन हादसों ने न केवल सैकड़ों चिंदियों को छीना, बल्कि विमान सुरक्षा पर भी गंभीर सवाल खड़े किए। इससे पहले हरियाणा के चर्ची दारी में सऊदी और एयरलाइंस और कजाकितान एयरलाइंस के विमानों की मिड-एयर टकर हुई थी, जिसमें 349 लोगों की मौत हो गई। अभी तक देखने में आया है कि घटना होने के बाद ही शासन-प्रशासन हरकत में आता है। इससे पहले भी ऐसी ही घटनाएं हुई हैं, लेकिन उनसे हमारी सरकार ने कोई सबक नहीं सोची है। भारत में विमान हादसों का लंबा इतिहास रहा है, जिन्होंने देश को झकझोर दिया। इन हादसों ने न केवल सैकड़ों चिंदियों को छीना, बल्कि विमान सुरक्षा पर भी गंभीर सवाल खड़े किए। इससे पहले हरियाणा के चर्ची दारी में सऊदी और एयरलाइंस और कजाकितान एयरलाइंस के विमानों की मिड-एयर टकर हुई थी, जिसमें 349 लोगों की मौत हो गई। अभी तक देखने में आया है कि घटना होने के बाद ही शासन-प्रशासन हरकत में आता है। इससे पहले भी ऐसी ही घटनाएं हुई हैं, लेकिन उनसे हमारी सरकार ने कोई सबक नहीं सोची है। भारत में विमान हादसों का लंबा इतिहास रहा है, जिन्होंने देश को झकझोर दिया। इन हादसों ने न केवल सैकड़ों चिंदियों को छीना, बल्कि विमान सुरक्षा पर भी गंभीर सवाल खड़े किए। इससे पहले हरियाणा के चर्ची दारी में सऊदी और एयरलाइंस और कजाकितान एयरलाइंस के विमानों की मिड-एयर टकर हुई थी, जिसमें 349 लोगों की मौत हो गई। अभी तक देखने में आया है कि घटना होने के बाद ही शासन-प्रशासन हरकत में आता है। इससे पहले भी ऐसी ही घटनाएं हुई हैं, लेकिन उनसे हमारी सरकार ने कोई सबक नहीं सोची है। भारत में विमान हादसों का लंबा इतिहास रहा है, जिन्होंने देश को झकझोर दिया। इन हादसों ने न केवल सैकड़ों चिंदियों को छीना, बल्कि विमान सुरक्षा पर भी गंभीर सवाल खड़े किए। इससे पहले हरियाणा के चर्ची दारी में सऊदी और एयरलाइंस और कजाकितान एयरलाइंस के विमानों की मिड-एयर टकर हुई थी, जिसमें 349 लोगों की मौत हो गई। अभी तक देखने में आया है कि घटना होने के बाद ही शासन-प्रशासन हरकत में आता है। इससे पहले भी ऐसी ही घटनाएं हुई हैं, लेकिन उनसे हमारी सरकार ने कोई सबक नहीं सोची है। भारत में विमान हादसों का लंबा इतिहास रहा है, जिन्होंने देश को झकझोर दिया। इन हादसों ने न केवल सैकड़ों चिंदियों को छीना, बल्कि विमान सुरक्षा पर भी गंभीर सवाल खड़े किए। इससे पहले हरियाणा के चर्ची दारी में सऊदी और एयरलाइंस और कजाकितान एयरलाइंस के विमानों की मिड-एयर टकर हुई थी, जिसमें 349 लोगों की मौत हो गई। अभी तक देखने में आया है कि घटना होने के बाद ही शासन-प्रशासन हरकत में आता है। इससे पहले भी ऐसी ही घटनाएं हुई हैं, लेकिन उनसे हमारी सरकार ने कोई सबक नहीं सोची है। भारत में विमान हादसों का लंबा इतिहास रहा है, जिन्होंने देश को झकझोर दिया। इन हादसों ने न केवल सैकड़ों चिंदियों को छीना, बल्कि विमान सुरक्षा पर भी गंभीर सवाल खड़े किए। इससे पहले हरियाणा के चर्ची दारी में सऊदी और एयरलाइंस और कजाकितान एयरलाइंस के विमानों की मिड-एयर टकर हुई थी, जिसमें 349 लोगों की मौत हो गई। अभी तक देखने में आया है कि घटना होने के बाद ही शासन-प्रशासन हरकत में आता है। इससे पहले भी ऐसी ही घटनाएं हुई हैं, लेकिन उनसे हमारी सरकार ने कोई सबक नहीं सोची है। भारत में विमान हादसों का लंबा इतिहास रहा है, जिन्होंने देश को झकझोर दिया। इन हादसों ने न केवल सैकड़ों चिंदियों को छीना, बल्कि विमान सुरक्षा पर भी गंभीर सवाल खड़े किए। इससे पहले हरियाणा के चर्ची दारी में सऊदी और एयरलाइंस और कजाकितान एयरलाइंस के विमानों की मिड-एयर टकर हुई थी, जिसमें 349 लोगों की मौत हो गई। अभी तक देखने में आया है कि घटना होने के बाद ही शासन-प्रशासन हरकत में आता है। इससे पहले भी ऐसी ही घटनाएं हुई हैं, लेकिन उनसे हमारी सरकार ने कोई सबक नहीं सोची है। भारत में विमान हादसों का लंबा इतिहास रहा है, जिन्होंने देश को झकझोर दिया। इन हादसों ने न केवल सैकड़ों चिंदियों को छीना, बल्कि विमान सुरक्षा पर भी गंभीर सवाल खड़े किए। इससे पहले हरियाणा के चर्ची दारी में सऊदी और एयरलाइंस और कजाकितान एयरलाइंस के विमानों की मिड-एयर टकर हुई थी, जिसमें 34

